क्रांतिवीर सरदारसिंह राणा सेवा ट्रस्ट, भावनगर द्वारा "क्रांतिवीर सरदार सिंह राणा" पर तैयार की गई वेबसाइट के लोंचिंग समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (१० अप्रैल, २०१८)

- में क्रांतिवीर सरदार सिंह राणा सेवा ट्रस्ट को इस बात के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ कि उन्होंने बहुत परिश्रम पूर्वक ये वेबसाइट तैयार करवाई है जिससे गुजरात के क्रांतिवीर सरदार सिंह राणा के संबंध में आवश्यक जानकारियां उन सबको प्राप्त हो सकेगी जिनके पास अभी तक उनके बारे में जानकारियां नहीं है।

- हमारे देश में क्रांतिकारियों मे से बहुत से क्रांतिकारियों ने देश में रह कर ब्रिटिश सरकार से संघर्ष किया और देश की आज़ादी के लिये प्रयत्न करते रहे। साथ साथ में बहुत से ऐसे भी क्रांतिकारी और स्वतंत्रता प्रेमी थे जो देश के बाहर जाकर और ब्रिटिश साम्राज्य के केन्द्र लंडन में रहकर क्रांतिकारी गतिविधियां चलाते रहे और देश की आज़ादी के लिये प्रयत्न करते रहे । ऐसे केन्द्रों में एक केन्द्र लंडन का इण्डिया हाऊस था जो क्रांतिकारियों के लिये अपनी गतिविधियां करने का केन्द्र था। भारत से जो विद्यार्थी पढ़ने के लिये इंगलेण्ड जाते थे वो भी इस इण्डिया हाऊस से जुड़ जाते थे तथा इण्डिया हाऊस उनकी सब प्रकार की सहाय करता था। 1905 में इसकी स्थापना हुई थी और यह भारतीय छात्रों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का एक बड़ा केन्द्र था। क्रांतिवीर श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा इसके संस्थापको में से थे। साथ-

साथ में श्री मदनलाल ढींगड़ा, श्री वीर सावरकरजी, श्री बापट, श्री कन्हाड़े, श्री पिल्लई, श्री भीखाजी कामा, श्री लाला लाजपतराय, दादा भाई नवरोजी तथा महात्मा गांधीजी भी यहां गए थे।

- सरदार सिंह राणा साहब जब इंगलैंड गए तो इण्डिया हाऊस के साथ इनका भी संबंध जुड़ गया। यह संस्था "Indian Sociologist" नाम का एक अखबार निकलती थी। ब्रिटिश शासन के द्वारा भारत में स्वतन्त्रता सेनानिओं पर जो दमन होता था उसे सामने लाने में Indian Sociologist अखबार का क्या योगदान था इस विषय पर अनुसंधान होना अभी बाकी है। गुजरात के स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चे भी शायद सरदार सिंह राणा के बारे में जानकारी कम रखते होंगे। इन हालत में इस वेबसाइट को तैयार करने में जिन सभी ने प्रयास किये है वे सराहनीय है।
- यह वेबसाइट क्रांतिवीर सरदार सिंह राणा जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है। इंगलैंड, पेरिस और स्विट्ज़रलैंड में लंबे अरसे तक सरदार सिंह राणा जी रहे और वहाँ रहकर उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष में हिस्सेदारी की तथा स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया। ऐसी वेबसाइट इतिहास में संशोधन करनेवालों को बहुत ही उपयोगी साबित होगी। हमारे देश में बहुत से गुमनाम क्रांतिकारी है जिनके जीवन के संबंध में विशेष अनुसंधान किये जाने की जरूरत है।

- सरदार सिंह राणा लंडन स्थित इण्डिया हाऊस के स्थापक सदस्य थे। वे होम रूल सोसायटी के उपाध्यक्ष के पद पर भी कार्यरत रहे। भारत से जो विद्यार्थी पढ़ने के लिए इंगलैंड जाते थे उनको वे छात्रवृत्ति भी दिया करते थे। जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय सोश्योलोजिस्ट परिषद का आयोजन हुआ था उसमें भाग लेने के लिए सरदार सिंह राणा जी भी गए थे। जब 1908 में देश के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 की 50वीं अर्ध शताब्दी पर इण्डिया हाऊस में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता सरदार सिंह राणा जी ने की थी।
- सरदार सिंह राणा जी का भारत में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया था। 6 साल तक वे फ्रांस में भी नजरबंद रहे थे। वे बड़े दानशील भी थे तथा विदेश में स्थित भारतीयों से धन इकट्ठा करके सत्कार्यों के लिए उसका उपयोग करते थे। जब श्री मदन मोहन मालवीय जी को वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए पैसे की जरूरत पड़ी तब 28 लाख रूपया इकट्ठा करके श्री राणाजी ने श्री मदन मोहन मालवीय जी को दिया था।
- इण्डिया हाऊस पर स्वतंत्ररूप से शोधकर्ताओं द्वारा अनुसंधान किया जाये तो स्वतंत्रता संग्राम के बारे में बहुत सी बातें उभर कर आ सकती है। इसी इण्डिया हाऊस में वीर सावरकरजी ने जो War of Independence मराठी में लिखा था

उसका अंग्रेजी में अनुवाद हुआ । इस कार्य में भी सरदार सिंह राणा जी का बहुत योगदान था। इसी प्रकार लाला लाजपतराय की एक पुस्तक को छपवाने की व्यवस्था भी राणाजी ने की थी। वे स्वयं तो क्रांतिकारी थे ही मगर साथ साथ अपने साथियों के क्रांतिकारी प्रयासों को बढ़ाने में भी उनका बड़ा योगदान था। रवीन्द्रनाथ टैगोर की शांति निकेतन की स्थापना तथा उसके विकास में भी श्री राणाजी का योगदान था। सरदार सिंह राणा जी बेरिस्टर थे और अंतर्राष्ट्रीय अदालत में वीर सावरकर जी का मुकदमा उन्होंने लड़ा था । वो बहुत ही अध्ययनशील थे तथा उनका बड़ा पुस्तकालय था। उन्होंने अपने पुस्तकालय की करीब 1 लाख पुस्तकें अन्य पुस्तकालयों को भेंट कर दी थी। सुभाषचन्द्र बोस जब जर्मनी गये थे तब जर्मन रेडियो पर उनके भाषण का प्रबंध श्री सरदार सिंह राणा जी ने किया था।

- श्री सरदार सिंह राणा जी का जन्म 1870 में हुआ था तथा वो 1957 में दिवंगत हो गये। उनका जीवन 87 वर्ष का रहा। इन 87 वर्षो में कुल मिलाकर 45-55 वर्ष तक वो विदेशों में रहे। इस प्रकार हम कह सकते है कि उन्होंने अपने जीवन का महत्तम भाग विदेशों में रहकर भारत माता की सेवा के लिए बिताया। 1951 में फ्रांस ने इनको अपना सर्वोच्च सम्मान दिया। ये सब बाते हमारे लिए बहुत ही गौरव की बाते हैं।

- मैं एक बार फिर क्रांतिवीर सरदार सिंह राणा सेवा ट्रस्ट तथा इसके पीछे कार्यरत श्री राजेन्द्र सिंह राणा जी को यह वेबसाइट launch करने के लिए बहुत बहुत बधाई देता हूँ। यह वेबसाइट हमारे युवाओं को प्रेरणा देती रहेगी, साथ-साथ में हमारे इतिहासकारों तथा अनुसंधानकर्ताओं को भी मूल्यवान सामग्री प्रदान करेगी। आज इस वेबसाइट का लोकार्पण परम श्रद्धेय मोहन भागवत जी के कर कमलों द्वारा हो रहा है, इसकी मुझे प्रसन्नता है। इस कार्यक्रम में मुझे बुलाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। आभार। जय हिन्द।